डा. प्रवीन
आँखों का अस्पताल
रेलवे पुल के नीचे, सिरसा
फोन : 01666-221900

आँख की एलर्जी (VKC)
वर्नल किरैटो कंजंक्टिवाइटिस

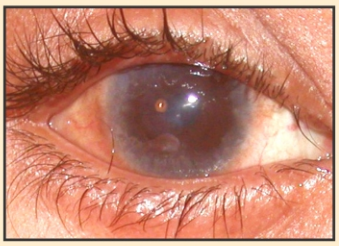

चित्र नं. 1

आँख में एलर्जी अनेक कारणों से हो सकती है जैसे कि वर्नल किरैटो कंजंक्टिवाइटिस (VKC), दवाईयों के कारण अथवा अन्य कैमिकल जैसे कि हेयर डाई या दूषित वातावरण में रहने के कारण। इन सब में से वर्नल किरैटो कंजंक्टिवाइटिस सबसे अधिक होने वाली एलर्जी है। अतः मुख्यता इसी के बारे में बताया जायेगा।

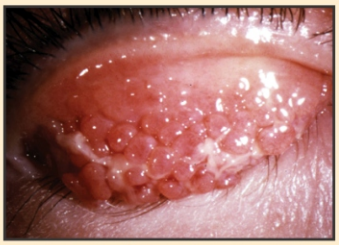

चित्र नं. 2

आँख की एलर्जी (वर्नल किरैटो कंजंक्टिवाइटिस) अर्थात सप्रिंग कटार एक बार बार होने वाली परन्तु अपने आप ठीक होने वाली आँख की तकलीफ है। यह IgE एंटीबौडीज द्वारा संचालित एलर्जी है। परिवार के अन्य लोगों में यह हो सकती है परन्तु यह एक से दूसरे को फैलने वाली छूत की बीमारी नहीं है। आँख की एलर्जी के साथ कई बार बुखार, साँस की तकलीफ या चमड़ी की एलर्जी भी हो सकती है। बच्चों में यह अधिक होती है तथा गर्मियों में अधिक होती है।

लक्षण : आँखों में जोर की खुजली, जलन, रड़क, पानी आना, धूप में आँख न खुलना, तार की तरह गाढ़ा पदार्थ आँख से निकलना तथा पलकों में भारीपन। आँखें लाल हो जाती हैं (चित्र 1)। पुतली के चारों तरफ सफेदी हो जाती है। पुतली के किनारे (लिम्बस) पर सफेद दाने हो सकते हैं तथा पलक के अन्दर भी दाने हो सकते हैं (चित्र 2)। कभी-कभी पुतली में भी जख्म बन सकते हैं जिसे शील्ड अल्सर कहा जाता है (चित्र 3)

चित्र नं. 3

बचाव : धूप से, धूल मिट्टी से तथा अधिक टी.वी. देखने से बचना चाहिए। यदि धूप में निकलना जरूरी है तो सिर पर टोपी की छाया या रंगीन चश्मा लगाना चाहिए। आँख पर बर्फ रखकर ठंडी सिकाई से भी लाभ होता है।

ईलाज : स्टीरायड आई ड्रॉप्स जैसे कि फ्लोरोमीथोलीन, लोटीप्रेडनीसोलोन तथा मास्ट सैल स्टैबीलाइजर जैसे कि ओलोपैटाडीन, कीटोटीफेन, सोडियम क्रोमोग्लाइकेट आँख के ल्युब्रिकैंट ड्रॉप्स आदि दवाईयां लम्बे समय तक डालनी पड़ती हैं। खाने के लिए भी एंटीहिस्टामिनिक या स्टीरायड दवाईयों की जरूरत होती है। अधिक तीव्रता वाले रोगियों के लिए नेत्र विशेषज्ञों द्वारा अन्य ईलाज भी सुझाये जाते हैं।

उपसंहार : अत: आँख की यह एलर्जी लम्बे समय तक चल सकती है उचित परहेज करें तथा नियमित अन्तराल पर नेत्र विशेषज्ञ को चैकअप कराते रहें क्योंकि कई बार दवाईयां काम करना बन्द कर देती हैं या दवाईयों के साइड इफैक्ट हो जाते हैं। आराम आने पर दवाईयों की मात्रा कम तो कर सकते हैं परन्तु दवाईयां बन्द न करें क्योंकि एक दम दवाईयां बन्द करने से एलर्जी दोबारा हो जाती है।